महात्मा मंदिर, गांधीनगर मे राज्य के कृषि, किसान कल्याण एवं सहकारिता विभाग द्वारा आयोजित सुभाष पालेकर प्राकृतिक कृषि पर कार्यशाला मे गुजरात के माननीय राज्यपालश्री आचार्य देवव्रत जी का संबोधन। (04092019)

- सर्व प्रथम मैं प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री जी तथा उप-मुख्यमंत्री जी दोनों महानुभावों का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। इन दोनों महानुभावों के सौजन्य से गुजरात प्रदेश के किसानों की उन्नति तथा भलाई के लिए प्राकृतिक कृषि के विषय पर हमें संबोधन करने के लिए श्री सुभाष - पालेकर जी को आज यहाँ आमंत्रित किया गया है।

- हमारे गुरुकुल कुरुक्षेत्र हरियाणा में लगभग 19 राज्यों के बच्चे पढ़ते है। वहाँ में 35 वर्ष तक प्रधानाचार्य रहा। वहाँ मेरे पास 200 एकड़ जमीन का एक फार्म है तथा 300 गाय है। वहाँ रासायनिक खेती होती रहती थी, जिसमें धीरे-धीरे हमारी लागत बढ़ रही थी। क्रमश: उत्पादन कम होता गया और हमने कई दुष्परिणामों का अनुभव किया। हमने यह देखा की रासायनिक खेती से पर्यावरण बिगड़ता है, पानी की खपत बढ़ती है, लागत भी बढ़ती है तथा खानेवालों का स्वास्थ्य भी बिगड़ता है। धीरे-धीरे मैं जैविक कृषि की और बढ़ा। इस पद्धति से भी हमें ज्यादा फायदा

नहीं हुआ। अंत में, हमने पद्मश्री सुभाष पालेकर जी की विधि को अपनाया।

- पद्मश्री सुभाष पालेकर जी की विधि वाली कृषि पद्धति गाय आधारित है। इस पद्धति में एक देशी गाय से 30 एकड़ की जमीन पर खेती की जा सकती है। इस कृषि पद्धति में गाय के गोबर और गो-मूत्र से किसान स्वयं अपना खाद तैयार कर सकता है। ये खाद तैयार करने की पद्धति को जीवामृत, घन-जीवामृत कहते है। भारतीय नस्ल की देशी गाय की 10 किलो गोबर में 300 करोड़ जीवाणु है। पिछले 8 सालों से हमने गुरुकुल, कुरुक्षेत्र की 200 एकड़ की जमीन में केवल पालेकर जी की विधि को अपनाये हुये कृषि की है तथा इससे हमारा उत्पादन कई गुना बढ़ गया है। में आप सभी को आह्वाहन करता हूँ कि कभी हरियाणा जाने का मौका मिले तो आप उन खेतों को अवश्य देखियेगा।
- में आप सभी किसान भाइयों को आग्रह करूंगा कि आप प्राकृतिक कृषि पद्धति को ही अपनाये। इस कृषि पद्धति से हमारी जमीन उपजाऊ बनती है, पानी की जरूरत कम रहती है, जिससे पानी की बचत होती है। मेरे अनुभव के आधार पर में यह कह सकता हूँ कि सुभाष पालेकर आधारित

प्राकृतिक कृषि पद्धति पर्यावरण की पूर्ण रक्षा करने में समर्थ है तथा हमें Global Warming से मुक्ति दिलाने की क्षमता रखती है।

- में फिर से यह कहना चाहूँगा की पालेकर जी आधारित प्राकृतिक कृषि पद्धति देशी गाय पर आधारित है। इस पद्धति को अपनाने से गाय का संवर्धन होगा तथा सड़कों पर घूमने वाली गाय किसानों की जरूरत बन जायेगी। रासायनिक खेती नहीं होगी तो कैंसर, डायाबिटीज़, हार्ट-अटेक जैसी जानलेवा बीमारियां हमें नहीं होगी तथा सरकार के करोड़ो रुपये का बचाव होगा। इस पद्धति से किसानों की लागत शून्य होगी, जिससे किसानों की आय अवश्य ही बढ़ेगी।
- आज में, गुजरात सरकार को तथा आप सभी को पुन: बधाई देता हूँ। में माननीय मुख्यमंत्रीजी, उप-मुख्यमंत्रीजी तथा सरकार की समग्र मंत्री परिषद का आभारी हूँ, जिन्होंने किसानों के हित में केबीनेट की बैठक रद करके इस विषय को महत्व दिया तथा आज की प्राकृतिक कृषि शिविर में डॉ. सुभाष पालेकर जी को आमंत्रित किया। आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।